International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 06-11-2023, Accepted: 22-11-2023, Published: 07-12-2023
Volume 9, Issue 6, 2023, Page No. 21-22

उपयोगितावादी विचारधारा तथा भारत पर इसका प्रभावः एक अध्ययन

रविना
पी. एच. डी. (इतिहास), वनस्थली विद्यापीठ निवाई, जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश
19 वीं शताब्दी का भरतीय इतिहास तथा समाज तत्कालीन विचारो से बडा प्रभावित हुआ । शताब्दी के मध्य में जाहां भारत मे सीधा ब्रिटिश शासन स्थापित हुआ, वहां युरोप के तथा मुख्य रूप से इग्लैंड के प्रचलित विचारो का भी प्रभाव पडा । इन विचारो भी प्रभाव मे से ही एक था उपयोगितावादी विचार। इस विचार ने भारत के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षनिक राजनैतिक सभी पक्षो को प्रभावित किया।
बैथम, जेम्स मिल तथा जॉन स्टुअर्ट मिल व्दारा विकसित उपयोगितावादी चिंतन संम्पूर्ण 19 वीं शताब्दी में विश्वव्यापी हो गया था। इग्लैंड के औपनिवेशिक देशो मे इसके अनुरूप अनेक परिवर्तन, संशोधन तथा सुधार लाने के प्रयास हुए। भारत मे अनेक कानून तथा व्यवस्थएँ इस चिंतन से प्रभावित हुई । अतः उपयोगितावादी सूख और दुख को मनुष्य की प्रेरक के कानून, व्यवस्था तथा सुधारो की कसौटी तथा मापदण्ड मानते है।
भारत के संदर्भ में उनका दृष्टीकोण नकारात्मक अधिक था तथा सकारात्मक कम था। अतः उपयोगितावादी विचारो सें उदारवाद तथा सुधारवाद तो आया परंतु इसका प्रभाव सीमित ही रहा यह भरतीय जनजीवन को पूरी तरह झकझोर न सका।

मूल शब्दः उदारवाद, उपयोगितावाद, विचारधारा, समन्वय, अधिकतम सुख, तर्कवाद कसौटी, मापदण्ड।

19वीं सदी में ब्रिटेन में उदारवाद की लहर बह रही थी। इसी क्रम में उपयोगितावादी विचारधारा सामने आई। इन विचारकों में बेंथम, मिल आदि का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। इंग्लैंड के हैलीबरी कॉलेज में जहाँ कंपनी के कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया जाता था। यहाँ टॉमस माल्थस एवं रिकार्डो आदि उपयोगितावादी विचारकों का बहुत प्रभाव था। यहाँ से शिक्षित युवा अधिकारी इन विचारधाराओं से बहुत प्रभावित थे और भारत की प्रशासनिक आर्थिक नीति में इन विचारों का समन्वय करना चाहते थे। फलस्वरूप भारत में तमाम आर्थिक–सामाजिक–प्रशासनिक सुधार लागू किए गए। उपयोगितावाद का सिद्धांत 'अधिकतम सुख' तथा तर्कवाद पर आधारित है। इस विचार का मूलमंत्र 'अधिकतम व्यक्तियों को अधिकतम सुख' रहा है। बैंथम ने उपयोगिता के सिद्धांत को तर्कपूर्ण ढंग से विभिन्न क्षेत्रों, शिक्षा, कानून, सामाजिक जीवन, राज्य प्रणाली आदि में प्रचलित करने का प्रयास किया। बैंथम ने उपयोगिता का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा कि ''उपयोगिता के सिद्धांत का अर्थ उस सिद्धांत से है जो प्रत्येक कार्य को चाहे जो भी क्यों न हो, उसकी प्रसन्नता को बढ़ाने या घटाने की प्रवृत्ति के अनुसार स्वीकार या अस्वीकार करता है। मैं यह बात हर कार्य के लिए कहता हूँ और मेरी यह बात किसी एक व्यक्ति के कार्य पर नहीं बल्कि प्रत्येक सरकारी कार्य के बारें में लागू होती है।'' अतः उपयोगितावादी सुख और दुःख को मनुष्य की प्रेरक शक्ति मानते हैं तथा सभी प्रकार के कानून, व्यवस्था तथा सुधारों की कसौटी तथा मापदण्ड मानते हैं। भारत में अनेक कानून तथा व्यवस्थाएँ इस चिंतन से प्रभावित हुई।

विशेषताएँ

इस विचारधारा के अनुसार विश्व के अधिकाधिक लोगों को अधिकाधिक सुख प्रदान करना अर्थात् यह अधिकतम लोगों के अधिकतम सुख पर बल देती है।

- अधिकतम लोगों को सुख तभी मिलेगा जब अधिकतम लोगों को ध्यान में रखकर नीतियाँ बनाई जाएगी।
- सुधारों के माध्यम से लोगों को सुखमयी बनाया जा सकता है। इस दृष्टि से यह विचारधारा सुधारों पर बल देती है।
- वस्तुतः सुधारों से परिवर्तन आता है और यह परिवर्तन अच्छा कानून तथा प्रभावी एवं दक्ष प्रशासन से आएगा। सरकार का जनसमुदाय से प्रत्यक्ष संबंध होना चाहिए। बिचौलिए सरकार के अच्छे स्वरूप एवं अधिकतम सुख के लक्ष्य को चोट पहुँचाते हैं।
- कानून का निर्माण स्थानीय जरूरतों को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए।

भारत की दशा का चित्रण

भारत में उपयोगितावाद के प्रभाव को जानने से पूर्व भारत की तत्कालीन दशा का अध्ययन आवश्यक है। सामान्यतः ब्रिटिश इतिहासकारों, लेखकों तथा शासकों ने भारतीय दशा का चित्रण बड़ा वीभत्स, एकांकी, एक पक्षीय किया है। 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तथा 19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में भारत के विविध क्षेत्रों की दशा बड़ी चिंताजनक तथा दयनीय बतलाई है। राजनैतिक दृष्टि से भारत में अराजकता जैसी स्थिति थी। केन्द्र सुदृढ़ न रहा था। राजनैतिक अस्थिरता थी। विभिन्न प्रदेशों में युद्ध होते रहने के कारण एक प्रकार की अशांति फैली हुई थी। सामाजिक क्षेत्र में अनेक कुरीतियों का बोलबाला था। महिलाओं की दशा अच्छी न थी। समाज में रूढ़िवादिता कर्मकाण्ड तथा बाहरी आडम्बर बहुत था। सत्ती प्रथा, कन्या वध, गुलामी प्रथा, पर्दे की प्रथा, कन्याओं में अशिक्षा आदि अनेक कमियां थी। जाति प्रथा की जटिलता बढ़ी थी तथा शिक्षा में युगानुकूल परिवर्तन न हुए थे। उपयोगितावादी लेखकों के अनुसार भारतीयों का चारित्रिक पतन हो गया था।

उपयोगितावाद का भारत के विभिन्न क्षेत्रों पर प्रभाव

19वीं शताब्दी में भारतीय जनमानस को विभिन्न क्षेत्रों में इंग्लैंड के तत्कालीन उपयागितावादी चिंतकों तथा उनसे प्रभावित भारत

में ब्रिटिश शासकों तथा अधिकारियों ने अपनी नीतियों तथा कानून द्वारा प्रभावित किया।

सामाजिक क्षेत्र में प्रभाव

उपयोगितावादी विचारकों से प्रभावित होकर तत्कालीन ब्रिटिश अधिकारियों ने भारत में प्रचलित सामाजिक बुराइयों को दूर करने में रूचि ली। यद्यपि सामाजिक क्षेत्र में परिवर्तन करते समय अंग्रेज बडें सतर्क तथा धीमी गति से चलना चाहते थे। इसमें सबसे अधिक रूचि लार्ड विलियम बैंटिक ने ली। भारत में आने पर सती प्रथा को रोकने में अत्यधिक सहयोग दिया। सती प्रथा के संदर्भ में बंगाल में दो दल बन गए थे। ईसाई मिशनरी भी इस प्रथा को बंद करने के लिए प्रयत्नशील थे। शिशु हत्या की प्रथा भी भारत के कुछ भागों में प्रचलित थी। इस क्रूर प्रथा का ध्यान 1789 ई. में ही हो गया था। 1795 ई. के बंगाल रेगूलेशन ग्ग्प् व 1804 के रेगुलेशन प्प् भी इस के खिलाफ बन गए थे। गुलाम प्रथा के उन्मूलन में कुछ ब्रिटिश अधिकारियों का प्रयास रहा। यद्यपि गुलामी प्रथा का भारत में उतना वीभत्स रूप नहीं था। जितना यूरोप में रहा। 1833 के एक्ट द्वारा इस प्रथा को कानूनी रूप से समाप्त कर दिया गया।

शिक्षा के क्षेत्र में योगदान

शिक्षा के क्षेत्र में उपयोगितावादी विचारकों का बड़ा प्रभाव रहा। लार्ड मैकाले, एलेक्जैण्डर डफ ने अपने विचारों से शिक्षा नीति में परिवर्तन कराए।

यद्यपि अधिकतर पूर्णतः उपयोगितावादी न थे, उन्हें लगा कि भारत में शिक्षा का उद्देश्य पंडित अथवा मौलवी पैदा करना ही है। भारतीयों का ज्ञान अरबी, फारसी, संस्कृत, पालि आदि तक सीमित है। अतः अंग्रेजी शिक्षा तथा वैज्ञानिक विषयों के अध्ययन पर कुछ विद्वानों ने बल दिया। 1813 के चार्टर एक्ट में शिक्षा पर एक लाख रूपया वार्षिक खर्च का प्रावधान भी किया गया। उपयोगितावादी विचारों से प्रभावित लॉर्ड मैकाले ने शिक्षा की संपूर्ण दिशा को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मैकाले अनेक बातों में उपयोगितावादी विचारों को नहीं मानता था परंतु शिक्षा के मामले में उसने बहुत सी पद्वति की कटु आलोचना की तथा अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाया।

आर्थिक क्षेत्र में प्रभाव

आर्थिक मामलों में उपयोगितावादी विचारक एड्म स्मिथ के विचार से बड़े प्रभावित थे, जो आर्थिक प्रगति के लिए एक प्राकृतिक स्वतंत्र व्यवस्था के हामी थे। वे प्रायः भूमि के स्थायी प्रबंध के विरोधी थे तथा सामान्य उन्नति में इसे बाधा समझते थे। उसने व्यापारिक एकाधिकार की तीव्र आलोचना की थी। बंगाल में जमींदारी प्रथा का विरोध करते हुए भारत में रैयतवाड़ी भूमि प्रथा का समर्थन करते हुए बतलाया था कि इससे सम्पत्ति की असमानता कम होगी।

संक्षेप में इन विचारकों ने व्यापार, उद्योग तथा कृषि के क्षेत्र में एक नया दृष्टिकोण दिया। स्वतंत्र व्यापार, खुली प्रतियोगिता, भूमि व्यवस्था में सुधार तथा भूमिकर प्रणाली में परिवर्तन के लिए प्रेरित किया।

राजनैतिक क्षेत्र में प्रभाव

उपरोक्त विचारकों के प्रभाव से राजनैतिक क्षेत्र भी अछूता न रहा। राजनैतिक दृष्टि से उनकी दृष्टि इंग्लैण्ड तथा भारत के प्रति समान न थी। प्रायः सभी विचारक ईस्ट इंडिया कम्पनी तथा बाद में भारत में ब्रिटिश साम्राजय के पोषक थे। भारत के संदर्भ में जेम्स मिल का बल 'अच्छी सरकार' पर था, न कि 'स्वशासित सरकार' पर। लॉर्ड रिपन तथा बाद के काल में भी शासन का स्वरूप अधिक प्रजातांत्रिक हो अथवा ब्रिटिश प्रभुता का आधिक्य रहे चर्चा तथा विवाद का विषय बना रहा।

निष्कर्ष

दरअसल, ब्रिटिश उपयोगितावादी विचारधारा भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद को औचित्य प्रदान कर रही थी। भारत में ब्रिटिश शासन को स्थायी बनाने के लिए जरूरी था कि यहां प्रशासनिक व सामाजिक सुधार किए जाए। ब्रिटिश माल की बिक्री तभी होगी जब रूढ़िवादी भारतीय समाज में आंशिक आधुनिकीकरण होगा। इस तरह उपयोगितावादी विचारधारा से औपनिवेशिक हित ही पूरे हो रहे थे। जब 1857 का विद्रोह हुआ उसके कारणों में एक कारण सामाजिक धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप को गिना गया। अतः जब ब्रिटिश ने पितृसत्तावाद से युक्त उपयोगितावादी विचारधारा एवं उदारवादी मुखौटे को भी उतार फेंका और सुधारों के प्रति कठोर रवैया अपनाया। यह उपयोगितावादी विचारधारा के तथाकथित हितवादी सिद्धांत के खोखलेपन को उजागर करता है।

संदर्भ सूची

1. Stokes Eric: The English Utilitarians and India, Oxford, 1959.
2. Sutherland, Gillain (Ed.): Studies in the growth of Nineteenth Century Government, London, 1972.
3. Spear, Perival: A History of Modern India, New Delhi, 1965.
4. Prasad, Bisheshar (Ed.): Ideas in History, Delhi, 1961.
5. Halvey, Eric: The Growth of Philosophical Radicalism (Tr. by Mary Mooris), London, 1952.
6. Mittal SC: India Disorted: A Study of British Historians on India, I, New Delhi, 1995, 1.